Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 3, May-June – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 17/05/2020 Accepted on : 30/05/2020 Publication Date: 30/06/2020

कोविड–19 वैश्विक महामारी का पर्यावरण पर प्रभाव

सुजाता चारण
शोधार्थी (समाजशास्त्र विभाग),
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
Email - sujatacharan@gmail.com

सारांश : कोविड–19 वैश्विक महामारी ने मानवता को खतरे में डाल दिया है। हर कोई अपने जीवन की सुरक्षा करने में लगा है। अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहते हुए लॉकडाउन के नियम की पालना कर रहे है। अधिकांश लोग अपने घरों में कैद हो कर रह गए। ऐसे में प्राकृतिक दुनिया सज सँवर रही है। पर्यावरण प्रदूषण कम हो रहा है। सभी महाद्वीपों में प्रदूषण और ग्रीनहाऊस उत्सर्जन कम हो गया है। जल निकाय स्वच्छ हो गए। औद्योगिक अपशिष्ट कम हो गया। विकासशील देश जैसे भारत, चीन, बांग्लादेश इत्यादि में एयर क्वालिटी इंडेक्स में लगातार सुधार देखने को मिल रहा है। ओजोन परत से सुधार होने के संकेत मिले है। धरती की सतह पर कम्पन्न में कमी महसूस की गई है। शोर–शराबा जिसने हम प्राकृतिक ध्वनि जैसे नदियों के बहते जल की आवाज, झरनों से गिरते जल की आवाज, हवा की ध्वनि, पत्तों की ध्वनि तथा पक्षी की चहचहाट आदि जो एक अद्भुत संगीत को जन्म देते है, उन्हें सुनना ही भूल गए थे। वो स्वर अब हमारे कानों में सुनाई पड़ रहे है। पशु–पक्षी जो कहीं छुप गए थे वो अब इन्सानी खौफ से बेफ्रिक होकर शहरों में विचरण करने लगे है।

खुला आसमान, शुद्ध व ठण्डी हवा, स्वच्छ पानी, पक्षी का कलरव का अहसास करके आज व्यक्ति आनन्द का अनुभव कर रहा है। वो आज लॉकडाउन के कारण कैद में है, पर प्रकृति के करीब हो रहा है। इस वैश्विक महामारी के समय में पर्यावरण ने अपने आप में सुधार करके मानव को सचेत रहने का एक और मौका दिया है। पर्यावरण में आए सकारात्मक बदलाव मानव के लिए सुखद समाचार है परन्तु साथ ही इन सकारात्मक प्रभावों की निरन्तरता को बनाए रखने की चुनौतियाँ भी है।

संकेतक शब्द : कोविड–19, महामार, पर्यावरण, सकारात्मक प्रभाव, बायेलोजिकल ऑक्सीजन ।

१ प्रस्तावना :

कोविड–19 जैसी वैश्विक महामारी से आज पूरी दुनिया त्रस्त है। आज पुरी मानव सभ्यता पर खतरा मंडरा रहा है। मानव कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। फिर भी ये बात भी सौ फिसदी सच है कि दुनिया का ये लॉकडाउन प्रकृति के लिए वरदान साबित हुआ है। काल बन कर आई ये महामारी ने हजारों को अपना निवाला बनाती जा रही। वैश्विक अर्धवस्था को भारी धक्का लगा है। लाखों लोगों ने अपना रोजगार खो दिया है। अपने घरों में कैद हो कर अपनी जिन्दगी को बचाने की कोशिश कर रहे है। कई तरह के मानसिक तनावों को झेल रहे है, परन्तु प्रकृति अपने आप को संवरने में लगी हुई है। पर्यावरण में सुधार हो रहा है।

२ कोरोना वायरस और पर्यावरण :

कोरोना वायरल एक संक्रमित बिमारी जिसकी रोकधाम लॉकडाउन द्वारा की जा रही है। लॉकडाउन के कारण जिन्दगी थम सी गई यातायात के तमाम साधन रेलगाड़ियाँ निजी वाहन, जहाज तथा हवाई जहाज इत्यादि बन्द हो गए, कारखानें और औद्योगिक काम धन्धे रूक गए। जिसका सीधा परिणाम साफ तौर पर पर्यावरण में आए बदलाव के रूप में दिखाई दे रहा है। प्रकृति को अपनी मरम्मत करने का समय मिल गया।

आज हमारी सुबह शुद्ध व ठण्डी हवा के साथ होती है। अलार्म के जगह परिंदो की चहचहाहट की गुंज से आँख खुलती है। वातावरण धुल कर उजला हो गया है। नीला आसमान और उसमें उड़ते रूई के जैसे श्वेत बादलों को देख कर ही मन आनन्दित हो जाता है। ये दृश्य सिर्फ भारत का नहीं पूरी दुनिया में दिखाई दे रहे हैं। वर्षों से किए जा रहे सामूहिक प्रयासों से जो पर्यावरण सुधार नहीं हो पाया था वो इस महामारी के समय में हो गया हो। नासा के द्वारा किए गए अध्ययन में ये पता चला है कि इस महामारी के कारण जो लॉकडाउन किया गया उससे वायु की गुणवत्ता में नाटकीय सुधार हुआ है। लॉकडाउन के कारण तमाम यातायात के साधन और फैक्ट्रियों के बन्द हो जाने से कार्बन उत्सर्जन रूक गया है। जिससे कई प्रतिशत प्रदूषण कम हो गया है। यदि हम अमेरिका के न्यूयार्क शहर की बात करें तो वहां पर पिछले साल की तुलना में 50 प्रतिशत प्रदूषण कम हो गया है। स्वीड़न को रिसर्चर किम्बर्ले निकोलस के अनुसार दुनिया का कुल

कार्बन उत्सर्जन 23 प्रतिशत परिवहन से होता है। इसमें निजी वाहन और हवाई जहाज का प्रतिशत अधिक है। लॉकडाउन के कारण ये प्रदूषण रूक गया है।

प्रदूषण नियन्ण बोर्ड के आँकड़ों पर नजर डालें तो दिखाई देता है कि दिल्ली में फरवरी 2020 में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 194 था जो अप्रेल में घटकर 80 हो गया। इसी अवधि में कोलकाता का 113 से घटकर 37, मुम्बई में 143 से 53 बैंगलोर में 112 से घटकर 31, कानपुर में 152 से 56 और लखनऊ में 261 से घटकर 55 पर आ गया। आईक्यू एयर विजुअल द्वारा कराए गए विश्व वायु गुणवत्ता 2019 के सर्वे के अनुसार दुनिया के 30 सबसे अधिक प्रदूषित शहरों में भारत के 21 शहर शामिल है। जिनमें इस लॉकडाउन के कारण प्रदूषण लगातार एक नाटकीय रूप से कम हो रहा है। पर्यावरण विद् एन. शिवकुमार के विचार है कि एक सप्ताह से भी कम वक्त में ज्यादातर शहरों की हवा शुद्ध हो चकी है। अगर हम हर एक महीने 24 घण्टे सबकुछ बन्द रखे तो कम से कम सभी को साफ हवा मिलेगी। इस बात को गम्भीरता से लेने का सही समय आ गया है।

सड़कों पर आवाजाही रूकने से धुल गुब्बार नहीं उठ रहे है। जिससे आबोहवा साफ हो गई है। इससे सांस से सम्बन्धी बीमार व्यक्तियों के स्वास्थ्य में सुधार हुआ है। वायु प्रदूषण के साथ–साथ ध्वनि प्रदूषण भी कम हुआ है। दिन भर होने वाला शोर खत्म हो गया अब हम हवा की सरसराहट व चिड़ियाओं की चहचहाहट को सुन पाते है। प्रकृति के समीप अपने आप को महसूस कर रहे है। धुएँ के हटने से हिमालय पर्वत भी साफ और कई किलोमीटर दूर से दिखाई देने लगा है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन में एक बयान जारी किया है कि ''कोरोना वायरस महामारी को नियन्त्रित करने के लिए प्रयासों ने आर्थिक गतिविधियों को कम कर दिया है और वायु, गुणवत्ता में स्थानीय सुधार हुआ है।

सभी जल निकाय साफ हो रहे है। भारत की यमुना और गंगा नदियाँ जो सरकारी प्रयासों से उतनी साफ नहीं हो पा रही थी जितनी इस लॉकडाउन की अवधि में हो गई है। नदियों में पानी इतना साफ हो गया है कि जलीय जीव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे है। नदियों में बायेलोजिकल ऑक्सीजन डिमान्ड (BOD) निर्मल व स्वच्छ दिखाई देने लगी है। जल स्तर भी ऊँचा उठा है।

औद्योगिकीकरण की दौड़ में हम प्रकृति के साथ ही खिलवाड़ कर बैठे जिसकी गोद में मानव सभ्यता व संस्कृति फलीभूत हुई है। मानव ने जंगलों को काट डाला जिसका पर्यावरण पर विपरित प्रभाव पड़ा। जंगली जीव बेघर होने लगे, कई तो विलुप्त होने की कगार पर पहुँच गए। लॉकडाउन से पेड़ों की कटाई भी रूक गई है। जीव जन्तुओं का भी स्वतन्त्र विचरण होता देखा जा रहा है। औद्योगिक कारखानों के बन्द होने से उसके अपशिष्ट पदार्थों का नदियों में मिलना बन्द हुआ है। यदि ये कहां जाए कि मानव जब कैद हुआ तो प्रकृति पुनः जीवित हुई तो गलत नहीं होगा।

३ पर्यावरण पर प्रभाव :

कोरोना वायरस के कारण लॉकडाउन की पालना पुरी दुनिया कर रही है। इस लॉकडाउन के पर्यावरण पर कई सकारात्मक प्रभाव सामने आए जिन्हें हम निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझ सकते हैं–

(i) लॉकडाउन के समय अवधि में दुनिया के अधिकांश हिस्सों में धरती की सतह पर कम्पन कम हुआ है।

(ii) नदियों में पानी स्वच्छ व निर्मल हुआ है।

(iii) कार्बन उत्सर्जन कम हुआ है। जिससे वायु गुणवत्ता बढ़ गई है।

(iv) शुद्ध हवा से स्वास्थ्य सुधार हुआ है।

(v) नास द्वारा सेटेलाईट से लिए गए चित्रों के अनुसार भारत की एअरो सोल ऑप्टिकल डेप्थ कम हुई है। जिससे आसमान साफ हुआ है। पार्टिकुलेट मैटर 2.5 तथा 10 जो अपने बीस वर्षों में निम्न स्तर पर है।

(vi) नाईट्स ऑक्साइड के स्तर में कमी आई है। इसकी पुष्टि युरोपियन अन्तरिक्ष एजेंसी के कापरनिकस सेटेलाईट ने की है।

कोरोना महामारी के समय में पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव के साथ–साथ नकारात्मक प्रभाव के रूप में मेडिकल कचरा कई टनों में जमा हो रहा है। कई देशों में मेडिकल कचरा बढ़ गया है। चीन के वुहान प्रान्त में इस महामारी के समय में हर दिन 200 टन कचरा एकत्रित हो रहा है। जिसमें मास्क, टिश्यू और मेडिकल सामान अधिक मात्रा में है। इस कचरे में प्लास्टिक का सामान अधिक होता है जो वर्षों तक पड़ा रहता है और पर्यावरण दुषित करता है। अभी तो लॉकडाउन है इस कारण पर्यावरण सुधार हो रहा है। परन्तु लॉकडाउन हटते ही पहले से तेज गति से औद्योगिकरण होगा, लोगों द्वारा अपने आर्थिक नुकसान की भरपाई की जाएगी इससे पर्यावरण प्रदूषण कई गुना बढ़ जाएगा।

भारत के उपराष्ट्रपति एम. वैकेया नायडू ने 23 अप्रेल, 2020 को विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर प्रकृति पर पर्यावरण के सजग प्रहरी बनने का आह्वान किया उन्होंने कहा कि ये सही समय है एकात्म मानवतावाद के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचार ''प्रकृति समस्त विकास की संस्कृति है, प्रकृति को नष्ट करके किया गया विकास विकृति उत्पन्न करेगा।'' का पालन करने का।

४ निष्कर्ष :

इस महामारी के दौरान पर्यावरण को अपनी मरम्मत करने का अवसर मिला है। वैश्विक कोरोना महामारी समस्त मानव जाति पर कहर ढाह रही है परन्तु पर्यावरण के लिए तो वरदान ही बन कर आई है। इस त्रासदी में प्राप्त पर्यावरण के सकारात्मक परिणामों को इस संकट से समय से निकलने के पश्चात् भी बनाए रखने की कोशिश करते हुए पर्यावरण को सुरक्षित व संरक्षित रखने की आवश्यकत है, तभी हमारा भविष्य भी सुरक्षित रहेगा।

संदर्भ :

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर।
2- World Health Organization AIR Quality Index - Website & AAPS.Who.int
3- AIR Quality Index India Website - www.aqi.in
4. World Air Quality Index Website - www.aqicn.org
5. Central Water Commission India Website - cws.gov.in